प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति 18.11.67

रिकार्ड– हमारे तीर्थ न्यारे हैं.....ओमशांति। बच्चों ने गीत सुना और बुद्धि का योग बाप के तरफ गया। बच्चों को अपने तीर्थों का पता पड़ा है। वह भी तीर्थ, यह भी तीर्थ। तुम्हारी तीर्थ तो बहुत सहज है। तुम एक ही बार यह तीर्थ करते हो। बुद्धि का योग लगाते हो। यह भी समझते हो कौन समझाते हैं। यह है भाग्यशाली रथ, जिसमें बेहद का बाप आय बच्चों को पढ़ाते हैं। यात्रा भी सिखलाते हैं। यह यात्रा और कोई सिखलाय न सके ;क्योंकि आत्माभिमानी तुम ही बनते हो। सबको आत्माभिमानी बनना पड़ता है। यही समझाना पड़ता है। मूल बात है समझाने की यह। आत्मा पहले2 प्योर गोल्डेन एज में थी। अभी आयरन एज में है। सबसे जास्ती जरूरी बात यह है समझाने की। अब फिर आत्म को पतित से पावन बनना है। अभी है कलियुग। फिर सतयुग जरूर होगा। इसलिए तुमको पवित्र जरूर बनना है। नहीं तो वापस जाय न सकेंगे। आत्माएं सब अविनाशी हैं। प्योर बनने लिए या तो है योगबल या तो सजाएं। योग को तुम ही समझते हो। योग का ही ढिंढोरा पीटना है। बाकी कोई काम की चीज है नहीं। जब तक मनुय अपन को आत्मा न समझे तब तक उल्टा से सुल्टा हो न सके। वापस जाय न सके। मूल बात उल्टा से सुल्टा बनना है। कहां भी जाते हो यह पक्का कर लो। विलायत में जाते हैं तो वहां बुद्धि का योग बहुत इधर–उधर फेल जाता है। यह अवस्था बाहर में नहीं रहती। कोटों में कोउ विरले हैं जो अपन को आत्मा समझ बाप को याद करते हैं। दुनियां (में) इतने ढेर मनुष्य हैं। कोई भी अपन को आत्मा नहीं समझते। देहाभिमान में आय उल्टा जो लटक पड़े हैं, तो फिर सुल्टा बनाने वाला भी चाहिए ना। मल्लयुद्ध करते हैं तो सुल्टा सुलाते हैं। तुमको भी अभी बाप सीधा रास्ता बताते हैं। पहले2 तो यह पक्का करो हम आत्मा हैं। उल्टे से सीधा जरूर होना है। अपन को आत्मा समझने बिगर बाप को याद करने का अकल ही नहीं होगा। मन्मनाभव कहना भी बहुत सहज है ;पंरतु उनका कोई अर्थ भी समझे ना। अब बाप कहते हैं अपन को आत्मा (समझ) मामेकम् याद करो। और सबकी बुद्धि देह के सम्बंध में लटकी हुई है। बाप कहते हैं देह के सब विकारी बंधन तोड़नी है। इन आंखों से जो कुछ देखते हो इनसे वैराग्य। बाप तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं। यह याद रहना चाहिए। बड़ी मंज़िल है। ऐसे नहीं हम शिवबाबा के बने तो नर से नारायण बन ही जावेंगे। नहीं। ऐसी सस्ती चने खाने की नहीं है। बहुत मेहनत है। इसमें एकांत में विचार–सागर–मंथन करना चाहिए। मैं आत्मा हूं। अब जाना है अपने घर। इस दुनियां में जो कुछ है विलायत भी है, जानते तो हैं ना। ऐसे तो कोई नहीं कहेगा विलायत है नहीं। तो बाप कहते हैं बुद्धि में जो कुछ आत्मा है इन सबको छोड़ना है। अब हमको वापस घर जाना है। हम आत्माएं सब मूलवतन में थे। फिर सतयुग में हम बहुत थोड़े आये। बाकी सब स्वीटहोम में थे। सतयुग में सुख भी था। शांति भी थी। यहां तो घर2 में अशांत ही अशांत है। इसलिए बाप कहते हैं यहां तुम जो कुछ देखते हो इनका त्याग। अपन को आत्मा अपने स्वीट होम को याद करो। नई दुनियां में यह तुम्हारे शरीर भी नहीं होंगी(होंगे)। आत्मा तो है ही अविनाशी। सिर्फ चोला बदल लेंगे। यह समझ की बात है ना। मनुष्य तो बिल्कुल ही बेसमझ बन पड़े हैं। अभी तुम एक बार समझदार बनते हो 21जन्म लिए। फिर आधा कल्प बाद तुम उल्टे लटक पड़ते हो। कितना वंडरफुल खेल है। वह भी अविनाशी है। इन बातों को कोई भी समझ न सके। भल तुम अखबार में डालो। आवाज जरूर फेलेगा ;परंतु फिर टू लेट हो जावेंगे। विवेक कहते हैं आवाज सब जगह जाना चाहिए। जिसके लिए तो बाबा समझाते हैं ;परंतु कोई करे भी ना। त्रिमूर्ति चित्र भी है। कितना क्लीयर है। त्रिमूर्ति शिवबाबा हमको पढ़ा रहे हैं। फिर हम विष्णुपुरी के मालिक बनेंगे। ब्रह्मा और विष्णु का भी कितना अच्छा राज समझाया है। सभी बच्चों की बुद्धि में है। बच्चों से भी पूछा जाता तो है तो सब कहते हैं हम ल.ना. बनेंगे। इनसे कम बोल भी नहीं सकते ;क्योंकि यह है नर से नारायण बनने की सत्य कथा। तो फिर ऐसे कैसे कहेंगे हम राम–सीता बनेंगे। एमऑब्जेक्ट ही हैं नर से

नारायण बनने की। शुभ बोलना चाहिए ना। राम–सीता क्यों कहें?नामी–ग्रामी भी सत्यनारायण की कथा है। बाकी बच्चे यह तो समझते हैं सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राजधानी स्थापन हो रही है। उसमें उंच पद पाने की मेहनत चाहिए। जो मेहनत नहीं करते हैं वह खुद भी समझते हैं हमसे मेहन पहुंचती नहीं। चार्ट रख नहीं सकते। क्या लिखेंगे, 5/10मिनट से क्या पद मिलेगा। फिर भी शुक्र है जो यहां बैठे हैं। कइयों को तो अंदर में आता है इससे तो चले जावें। गृहस्थ व्यवहार में जो रहते हैं वहां का खान–पान,वायब्रेशन, वायुमंडल कितना खराब होता हे। वहां से यहां आने में बड़ा मजा आता है ;पंरतु कोई2 को फिर उस तरफ की कशिश होती है। बाप भी कहते है। गृहस्थ व्यवहार में तो रहना ही है। यहां कितने बैठ जावेंगे। तुम्हारा है ही बेहद का सन्यास। बुद्धि से पुरानी दुनियां को भूल जाना है। अपन को आत्मा समझ सुल्टी हो जाओ। बाप को भी अभी ही याद करना है। सतयुग में तो याद करने की बात ही नहीं। तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। फिर ड्रामाप्लैनअनुसार थोड़ा करके नीचे उतरना होता है। सतोप्रधान से फिर सतो–रजो–तमो में आना ही है। यह चक्र का राज समझना चाहिए। तुम्हारी बुद्धि में एक सेकेंड में सारा चक्र फिरता रहता है। बाबा के बुद्धि में सारा चक्र सेकेंड में फिरता रहता है। वास्तव में स्वदर्शन चक्रधारी तो बाबा की आत्मा को कहना चाहिए, जो तुम आत्माओं को स्वदर्शनचक्रधारी बनाते हैं। इस समय तुम हो ब्राह्मण। देवताएं भी स्वदर्शनचक्रधारी नहीं बनते। तुम ब्राह्मण ही बनते हो ;परंतु यह अलंकार तुमको शोभेंगे नहीं। विष्णु को शोभती है। तुमको शोभता भी नहीं और तुम स्थाई भी नहीं रहते हो। घड़ी2 उपर–नीचे होते रहते हो। बाप कहते हैं बच्चे लाइट हाउस बनो। सबको रास्ता बताना है अपने शांतिधाम जाने की। तुम्हारी बुद्धि में शांतिधाम–सुखधाम है। सुखधाम में पवित्रता,शांति सम्पन्न होती है। तुम जानते हो 5000वर्ष पहल हम आत्माएं शांतिधाम में थीं। अब नहीं हैं। फिर बाबा आया हुआ है ले जाने। वहां शांति की बात नहीं रहती। हम सुखधाम में जावेंगे वाया शांतिधाम। तो शांतिधाम को भी याद करना पड़े। बच्चे जानते हैं बाबा को आर्गन्स मिली है डिफेक्टेड। भल तमोप्रधान कहते नहीं हैं। यह तो इशारे में समझा जाता है। बाप समझाते हैं मैं बहुत जन्मों के अंत के भी अंत में प्रवेश करता हूं। जबकि इनकी वानप्रस्थ अवस्था होती है। फिर दूसरे वानप्रस्थ अवस्था तो आवेगी नहीं। यह सिद्ध कर बताते हैं। मनुष्य मूंझते हैं ब्रह्मा को क्यों रखा है?अरे, ब्रह्मा को भगवान तो कहा नहीं जाता। ब्रह्मा भी देवता कैसे बनते हैं?ब्राह्मण सो देवता बन रहे हैं तो जरूर ब्रह्मा भी होगा ना। नहीं तो ब्राह्मण कहां से आवे?ब्राह्मण ही मनुष्य से देवता बनते हैं। तो जरूर पतित हैं जो फिर पावन देवता बनते हैं। भगवानुवाच है ना मैं बहुत जन्मों के अंत में साधारण बूढ़े तन में प्रवेश करता हूं। तो उनका भी नाम होगा ना। दो हो जाते हैं। तुम लिखते भी हो शिवबाबा केअर ऑफ ब्रह्मा दादा। बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश कर फिर इनका नाम बदलता हूं। बहुतों के नाम बदले ;क्योंकि यह बेहद का सन्यास होत है ना। सन्यासी बनते हैं उनका भी नाम बदलते हैं। इनका है बेहद का सन्यास। ब्राह्मणों के बाप का नाम भी जरूर ब्रह्मा ही होगा। और कोई हो न सके। यह खेल कितना अटपटिया है। कल्प2 यह चक्र रिपीट होता है। आधा कल्प जीत फिर आधा कल्प हराते हैं। दोनों बराबर हैं तो हरावेंगे भी बराबर। माया भी कोई कम नहीं। ढेर हराते हैं। सीढ़ी को तो तुम समझ गए हो। कैसे हम नीचे उतरते हैं। 84जन्म लेते हैं टाइम पास हो जाता है। टिक2 होती जाती है। इस टिक2 से ही ड्रामा फिरता है। यह तो नहीं बतावेंगे कि इतने सेकेंड में हमारी 84जन्म पूरी हुई। कितने सेकेंड पास हुए होंगे। डेट बदलते गए। मास, सम्वत् बदलता गया। कितने वर्ष ,कितने विक्रम, कितने दिन ,कितने घंटे पास किये। यह भी हिसाब है ना। बाबा टोटल कह देते हैं अभी तुम्हारी पिछाड़ी है। तुमने 84जन्म ऐसे लिए हैं। यह टिक2 चलते2 5000वर्ष आकर पूरे हुए हैं। अब बाप ने कितनी अच्छी युक्ति बताई है। याद की यात्रा से तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। इसके लिए पूरा पुरुषार्थ करना है। करेंगे फिर भी ड्रामाप्लैनअनुसार ही। ऐसे नहीं कोई समझे 5घंटा बदली हम 3घंटा में

गाड़ी चलाय लेंगे। नहीं। ड्रामा प्लेनअनुसार सबकी गाड़ी चलती रहती है। यह सब बातें अच्छी रीति समझने की हैं। बाप सुनाते ही हैं धारणा करने लिए। स्कूल में पढ़ते2 जब बड़ा परीक्षा पास कर लेते हैं तो फिर पहली बातें भूल जाते हैं। पास्ट हो गया ना। जो पास हुआ सो खतम। अभी तुम समझते हो जो पास हुआ सो फिर 5000वर्ष बाद रिपीट होगा। ड्रामा की समझ अभी तुम बच्चों को मिली है। इस ड्रामा के अंदर हम 84जन्म लेते हैं। और कोई मनुष्य यह बातें नहीं जानते। यह बातें तुम यहां ही आकर सुनते हो और समझते हो। 84जन्मों अनुसार ही भक्ति करते हैं। ज्ञान भी फिर उसी अनुसार लेंगे। आगे–पीछे नहीं। जिन्होंने शिवबाबा की भक्ति शुरू की है अव्यभिचारी वह ही आकर पहले ज्ञान लेंगे। यह भी हिसाब है ना। हिसाब भी बहुत महीन है ;परंतु डिटेल में जास्ती नहीं जाना है। बाप कहते हैं टाइम वेस्ट मत करो। जास्ती यह खयाल न करो। मूल बात है तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। मैं आया ही हूं सतोप्रधान बनाने। तुम्हारी रेस है ही याद की यात्रा पर । उंच जीवन बनाना है याद की यात्रा से। घर–गृहस्थ में रहते पवित्र बनना कितना डिफिकल्ट बताते हैं। कहते हैं हमारा कुटुम्ब बहुत बड़ा है। खान–पान का बहुत खिट–पिट चलता है। बाबा कहते हैं यह तो होगा ही। सब कलियुगी लोकलाज कुल की मर्यादा है। वह जरूर तोड़नी पड़े। अभी तो सबको पवित्र बनने कहा जाता है। मीरा भक्तिन थी ;परंतु उनको कहा थोड़े ही गया तुम पवित्र बनो तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। वह पवित्र रहना अच्छा समझती थी। उनको कृष्ण का सा. होता था। भक्ति माल में शिरोमणि गाई जाती है। ज्ञान माल भी आधा कल्प की है। तुम्हारी है ज्ञान माल। यह एक ही स्कूल है। एक ही जगह तुम पढ़ते हो। कितने बैंचेज निकलते जाते हैं। नाम ही रख देते हैं। सच्ची गीता पाठशाला। तो झूठी पाठशाला कौन सी है। जो भी शूद्रों की पाठशालायें हैं वह सब हैं झूठी। तुम ब्राह्मणों की है सच्ची2 पाठशाला। कहां शूद्र पैर, कहां तुम ब्राह्मण चोटी। दुनियां सब है शूद्रों की पाठशाला। साधु–संत सब शूद्र हैं। बाबा ने समझाया है सन्यासी हठयोगियों को गीता भी पढ़ने की है नहीं। वह राजयोग सिखलाय न सके। वह तो ब्रह्म को,तत्व को मानने वाले तत्व ज्ञानी हैं। वह इन बातों को मानेंगे नहीं। वह तो जंगल में रहते हैं। आजकल तमोप्रधान बने हैं तो वह ताकत ही नहीं ,जो उन्हों को जंगल आदि में कोई खाना आदि पहुंचावे। नीचे उतरने से ताकत खतम हो गई है। सतोप्रधान से तमोप्रधान बन पड़े हैं। जो पहले2 आते हैं उनमें ताकत रहती है। इसलिए नाम भी होता है। तमोप्रधान का नामाचार नहीं होगा। सतोप्रधान का ही नामाचार होता है। नई आत्माएं जो आती हैं वह तो प्योर सतोप्रधान हैं ना। अभी सबसे जास्ती मान है शंकराचार्य का। सब आकर उनको माथा टेकते हैं। जरूर कोई शुद्ध आत्मा ने उनमें प्रवेश किया है। गुरुनानक ने शुद्ध आत्मा ने प्रवेश किया तो कितना उनका मान हो गया। वह लोग सिर्फ नानक नहीं कहेंगे। वास्तव में गुरू तो हैं नहीं। वह किसकी सदगति कर न सके। कहते भी सदगुरू अकाल। अपने मुख से उनकी महिमा भी करते हैं। फिर अपनी पूजा बैठ कराते हैं। अकालमूर्त तो वह हैं। जिसकी महिमा गाते हैं एको ओंकार.....सच्चा सदगुरू वह है। बाकी तो ढेर हैं। कितने उनके फालोवर्स हैं। गुरू हैं नहीं ;परंतु नाम पड़ता है तो घमंड आ जात है। कहते भी हैं मानुष को देवता बनाने वाला सदगुरूअकालमूर्त वह है। वह बाप ही आकर तुमको कहते हैं बच्चे। दूसरा कोई कह न सके। आत्मा अकालमूर्त है। यह तुम्हारा अकालतख्त है। सभी मनुष्य मात्र को अकालमूर्त आत्मा के तख्त हैं। बोलती–चालती वह अकालमूर्त है। अभी तुम तमोप्रधान बन पड़े हो। इसलिए बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश हो जाये। आत्मा सतोप्रधान बन जाये। तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट ही यह है। हम यह (ल.ना.) बनते हैं। अभी हम संगम पर हैं। अब ड्रामा पूरा होता है। हमको वापस जाना है। यह भी याद करना पड़े। तब तो विकर्म विनाश हों। कितना समझाते रहते हैं। अच्छा, मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप व दादा का यादप्यार ,गुडमार्निंग।